परमार कॉमिक्स

संख्या 167 मूल्य 7/-

सर्वभक्षी कुण्डोदर और विचित्रबालक

Scan & editing by Rahul Dubey

सर्वभक्षी कुण्डोदर और विचित्र बालक

सम्पादक: अजय पलाहा चित्रांकन: प्रदीप सोनी लेखक: डॉ॰ महेन्द्र मित्तल

प्राचीन काल की बात है। सात जिन्हा वाला कुण्डोदर नामक एक इच्छाधारी नाग अपने कुल देवता की पूजा में लगा हुआ था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर नागों के कुल देवता ने एक दिन कुण्डोदर को दर्शन दिये —

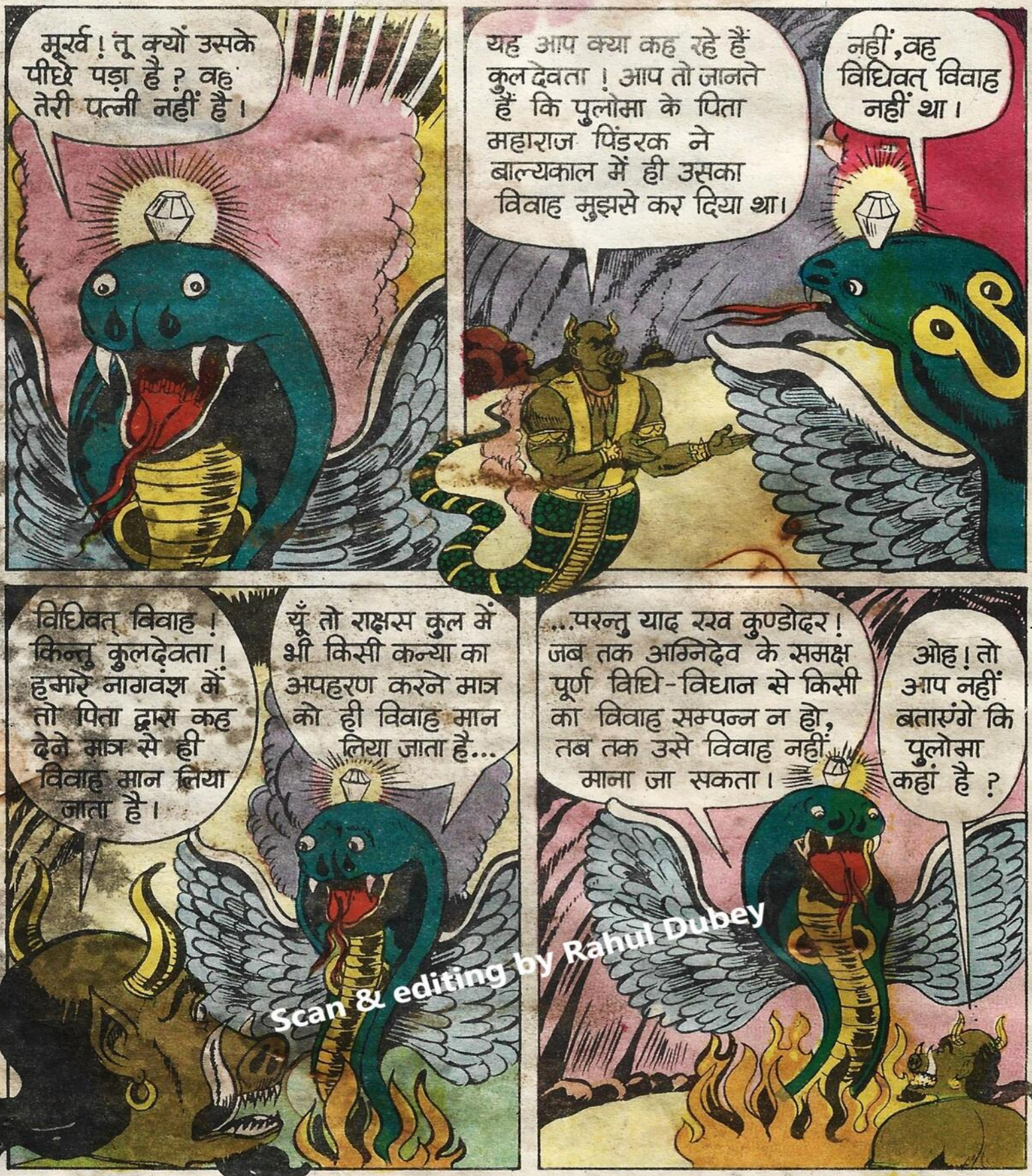

Scan & editing by Rahul Dubey

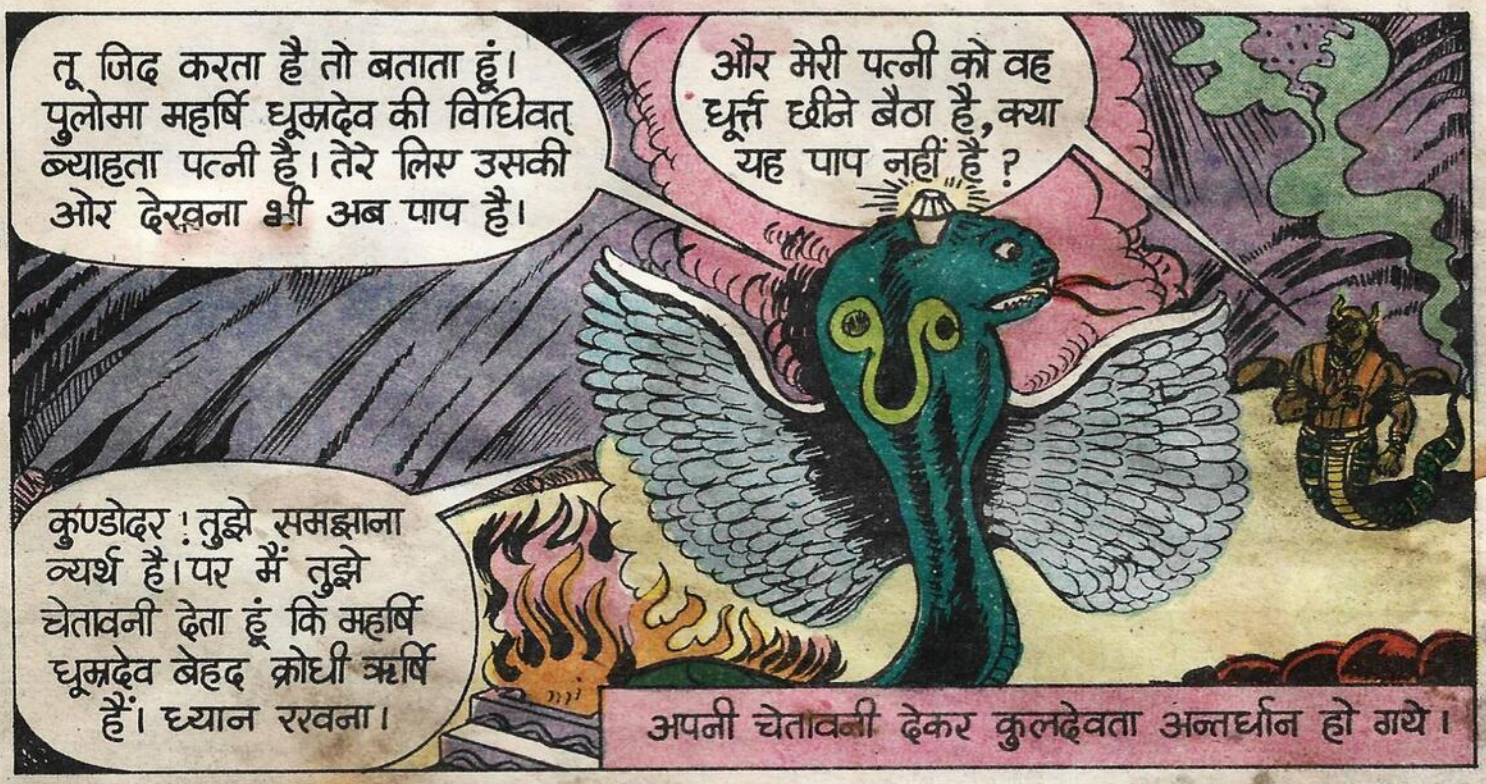
तू जिद करता है तो बताता हूं। पुलोमा महर्षि धूम्रदेव की विधिवत् ब्याहता पत्नी है। तेरे लिए उसकी ओर देखना भी अब पाप है।
और मेरी पत्नी को वह धूर्त छीने बैठा है, क्या यह पाप नहीं है ?
कुण्डोदर ! तुझे समझाना व्यर्थ है। पर मैं तुझे चेतावनी देता हूं कि महर्षि धूम्रदेव बेहद क्रोधी ऋषि हैं। ध्यान रखना।
अपनी चेतावनी देकर कुलदेवता अन्तर्धान हो गये।

कुण्डोदर पिछली घटना पर विचार करने लगा।
पुलोमा ! रोना बन्द कर। नहीं तो...।
ऊँ...ऊँ...ऊँ.. नहीं तो...।

वो देख, मैं तेरे को उस नागराज को सौंप दूँगा।
नहीं sss!

भयभीत बच्ची पुलोमा चुप हो गई तो राजा उसे रथ में बिठाकर वापस लौट चला।

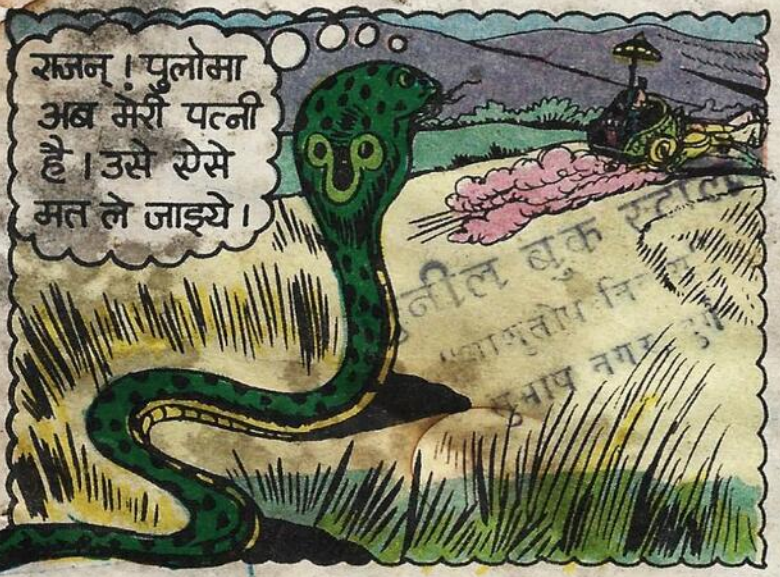

तभी नागराज कुण्डोदर का सपना टूटा और उसने अपना सिर थाम लिया।

दूसरी ओर महर्षि धूम्रदेव के आश्रम में —

महर्षि धूम्रदेव के जाने के दूसरे दिन —

Scan & editing by Rahul Dubey

खाइये, ये फल बिल्कुल ताजे हैं विप्रवर ! आप क्या सोचने लगे ?
कुछ नहीं देवी ! मैं इन फलों की ताजगी और मिठास का अनुमान लगा रहा था।
केवल अनुमान ही मत लगाते रहिएगा विप्रवर ! इनका स्वाद भी तो लीजिए। ये बहुत मीठे हैं।
कुण्डोदर एकाएक उठ खड़ा हुआ।
हां ! और इनकी मिठास पर मेरा अधिकार भी है प्रिय !
क्या ?
मैं ठीक कह रहा हूं पुलोमा। धूम्रदेव से पहले, मैं तुम्हारा पति हूं। मेरा तुम पर पूरा अधिकार है।
नीच ! निकल जा यहां से।

दूसरे ही क्षण कुण्डोदर वाराह नाग का रूप धारण कर पुलोमा पर झपटा—

सुशील बुक स्टाल
"आशुतोष निवास"
भुवाल सागर, दुर्ग
सुशील लाल

उसी समय महाराज पिंडरक के राजमहल में —
क्या हुआ मुनिवर! आप अचानक उठ क्यों गए?
मेरी बायीं आँख फड़क रही है राजन्! मुझे तत्काल आश्रम में पहुंचना चाहिए। कहीं पुलोमा किसी कठिनाई में न पड़ गई हो।

ऐसा कुछ मत सोचिए मुनिवर! अशुभ सोचने से, अशुभ होने का डर बन जाता है। पुलोमा आपकी पत्नी है। उसकी ओर दृष्टिपात करने का साहस कोई नहीं कर सकता।

पर मेरा मन कहता है, उस पर अवश्य कोई विपत्ति आ पड़ी है। मेरा वहां पहुंचना बहुत जरूरी है।
तो फिर ठहरिये, मैं भी आपके साथ चलता हूं।

कुछ देर बाद —
सारथी! रथ और तेज चलाओ।

और जब वे आश्रम में पहुंचे —

नहींSSS! पुलोमा, तुम कहां हो ?

!!!

!!!

विलाप करते महर्षि को राजा ने सांत्वना दी।

मुनिवर ! जिस किसी ने भी ऐसा किया है, हम उसे नहीं छोड़ेंगे।

नहीं महाराज ! मैं उसे स्वयं दण्ड दूंगा।

दूसरी ओर कुण्डोदर पुलोमा को लेकर अपनी खोह में पहुंचा —

चल इधर !

नहीं दुष्ट, छोड़ दे मुझे।

Scan & editing by Rahul Dubey

अचानक पुलोमा ने पीड़ा से कराहकर अपना हाथ छुड़ाया और —
आह...उफ...मइया री!
क्या हुआ?
कुन्डोदर! तू जा यहां से।
बूढ़ी औरत ने पुलोमा को संभाला।
घबरा मत बेटी! मैं हूं यहां।
हाय मां! मुझे बहुत पीड़ा हो रही है।
कुछ देर बाद पुलोमा ने एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया।
कुण्डोदर!
उस नवजात शिशु के मुख से अपना नाम पुकारा जाते सुनकर कुण्डोदर भय से कांप उठा।
!!!
!!!
कुण्डोदर! मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा।

यह किस बला ने जन्म लिया है।
अपनी खैर चाहता है तो यहां से भाग जा कुण्डोदर। यह बालक साधारण मालूम नहीं पड़ता।
पर दूसरे ही क्षण —
तू मुझे डरा मत बूढ़ी चुड़ैल! सर्वभक्षी कुण्डोदर जिसे चाहे नष्ट कर सकता है। कुल देवता का वरदान है मुझे। तू हट मेरे सामने से।
नहींsss!
तब बूढ़ी औरत क्रोध में भर फुफकार उठी।
तू जाता है यहां से या फिर तुझे भेजना पड़ेगा?
अच्छा! सेविका होकर तेरी इतनी हिम्मत।
एकाएक बूढ़ी औरत कुण्डोदर की ओर झपटी, —
अपनी मां को सेविका कहता है नीच! ठहर, अभी मजा चखाती हूं तुझे।
झ्रें...अ...अ...अ...

दूसरे ही पल कुण्डोदर ने अपना सर्वभक्षी रूप धारण किया।
हा...हा...हा...हा!
तेरा सर्वनाश हो जायेगा कुण्डोदर!
गड़प! चल बुढ़िया। तेरे को भी हजम कर लिया। बहुत बक-बक करती थी।
उसी समय—
ले, इस चट्टान को भी हजम कर नीच।
!!!

Scan & editing by Rahul Dubey

महर्षि धूम्रदेव का पुत्र इतना शक्तिहीन नहीं है, जो इस कायर से डर जायेगा। इस मातृहन्ता को मैं सजा दिये बिना नहीं छोड़ूंगा।
लेकिन बेटा, यह राक्षस मायावी और दुष्ट है।
यह मायावी राक्षस नहीं है मां। यह इच्छाधारी नाग है। मैं इसका सारा स्वाँग आज कुचल डालूंगा।
हा...हा...हा...हा!
एकाएक भयानक नाग बनकर कुण्डोदर बालक पर झपटा —
फूं...अं...अं...अं...अं...
नहीं कुण्डोदर, छोड़ दे मेरे बेटे को।
मुझे कुछ नहीं होगा मां! तू डर मत।

और फिर—
धड़ाम
क...ड़...ड़...ड़...ड़...
आह!
भाग यहां से।
उफ!

बू...ऊ...ऊ...म...
बड़ाम
उफ!
आकाश में पहुंचकर कुण्डोदर ने अपना रूप बदला...
इस बालक से निपटने के लिए कोई दूसरा रास्ता अपनाना होगा।
...और—
इस बालक के रहते मैं पुलोमा को कभी नहीं पा सकूंगा।
दूसरे ही पल कुण्डोदर कबूतर बनकर उड़ चला।
मुझे आगे जाकर इन्हें रोकना होगा।

Scan & editing by Rahul Dubey

अग्निदेव की बात पर धूम्रदेव क्रोधित हो उठे —
क्या कहा ? पुलोमा उसकी पत्नी। यह आप क्या कह रहे हैं ? आप साक्षी होकर भी झूठ बोल रहे हैं।
मैं ऐसा नहीं कह रहा मुनिवर! सर्वभक्षी कुण्डोदर ऐसा कहता है। क्योंकि बाल्यकाल में एक बार, महाराज पिंडरक ने पुलोमा को डराने के लिए, उसे कुण्डोदर को सौंप देने की बात कही थी। तभी से वह उसे अपनी पत्नी मान बैठा है।
परन्तु महाराज पिंडरक ने आपके समक्ष पूर्ण विधि-विधान अनुसार पुलोमा को मुझे सौंपा था।
यही सत्य है मुनिवर! और अब आपका पुत्र उस दुष्ट कुण्डोदर से अपनी माता की रक्षा का प्रयत्न कर रहा है।
मेरा पुत्र! कहां है वह ?
हां मुनिवर! आपका पुत्र! तेजस्वी और बलशाली पुत्र! कुण्डोदर की गुफा में उसका जन्म हुआ और अब शिवलिक की पहाड़ियों में वह कुण्डोदर से जूझ रहा है।
ओह! मैं अभी वहां जाता हूं।

अग्निदेव के अन्तर्धान होते ही महर्षि धूम्रदेव अपने योगबल से आकाश में उड़ चले।
सर्वभक्षी कुण्डोदर! मैं तुझे ऐसी मौत मारूंगा कि तेरी सात पीढ़ियां भी कांप उठेंगी।
दूसरी ओर एक आलीशान रथ तीव्र गति से बढ़ा चला आ रहा था।
तभी—
अरे!
हिनSSSS
!!!
!!!
युवक रथ से उतरकर पुलोमा के पास आया—
आप इस कोमल बालक के साथ बियाबान जंगल में भटकने वाली कौन हैं देवी और क्या मैं चन्द्रनगरी का युवराज चन्द्रकेतु आपकी कुछ सहायता कर सकता हूं?
धन्यवाद युवराज! हम चले जायेंगे।

मां ! मैं चलते-चलते थक गया हूं। क्यों न रथ में चलें ?
नहीं बेटा ! अनजान राहों पर अनजान लोगों का साथ बहुत सोच-समझकर करना चाहिए।
पर मैं बहुत थक गया हूं मां !
देवी ! मान लीजिए न बालक की बात। आप जहां कहोगी मैं आपको पहुंचा दूंगा।
आखिर पुलोमा को बालक की बात माननी पड़ी।
आप कहां जायेंगी देवी ?
हमें पूर्णेश्वर राज्य की ओर जाने वाले मार्ग पर छोड़ दीजिए। वहाँ के राजा पिंडरक मेरे पिता हैं।
अवश्य देवी !
एकाएक तेज गति से जाते रथ ने धरती छोड़ी और आकाश में उड़ चला —
अरे ! तुम हमें कहां ले जा रहे हो ?
घबराओ मत देवी ! मैं तुम्हें पहले चन्द्रनगरी ले जा रहा हूं। वहां कुछ दिन मेरा आतिथ्य ग्रहण करना।

Scan & editing by Rahul Dubey

तभी-
चीं...चीं...चीं...
चीं...चीं...चीं...
चीं...चीं...चीं...
और फिर -
चीं...चीं...
चीं...चीं...
चीं...चीं...
दूसरे ही क्षण —
धम्म
!!!
कितना सुन्दर और तेजस्वी बालक है।
आपने अपने रक्त को नहीं पहचाना पिताश्री !

क्या कहा ? मेरा रक्त ! ओह, तुम मेरे पुत्र हो। फिर तुम्हारी मां कहां है बेटे ?
उसे दुष्ट कुण्डोदर आकाश मार्ग से ले गया है पिताश्री ! आकाश में मैं उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।
मैं उस दुष्ट को सर्वभक्षी अग्नि के सुपुर्द करके ही दम लूंगा।
तत्काल ही महर्षि धूम्रदेव ने लकड़ियां एकत्र कीं और उन्हें प्रज्वलित कर दिया।
जब तक मैं उस नीच को खदेड़ता हुआ यहाँ लेकर न आऊँ, तब तक तुम इस आग को प्रज्वलित रखना बेटे!
!!!
जी पिताश्री !
अगले ही पल —
मैं आ रहा हूं कुण्डोदर।
!!!

तुझे बड़ा गुमान है न अपने सर्वभक्षी होने का...
...बड़ा अहंकार है अपने इच्छाधारी होने का। आज तेरी सभी शक्तियों का नाश करके तेरी हस्ती को इस संसार से मिटा दूंगा।
उधर आकाश में जबरन जूझ रहा था कुण्डोदर पुलोमा से —
मेरी बात मान जा पुलोमा! तू मेरी पत्नी है। तेरे पिता ने तुझे पहले मुझे ही सौंपा था। इसलिए तुझ पर पहला अधिकार मेरा है।
मुझे छोड़ दे नीच! मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं है। मैं पतिव्रता हूं और महर्षि धूम्रदेव मेरे पति हैं।
हा-हा-हा! उस कायर की पत्नी बनकर तुझे क्या मिला? जंगल की झोंपड़ी। मैं तुझे राजमहल में रखूंगा। तीनों लोकों का सुख तेरे कदमों में डाल दूंगा। मेरी बात मान ले।
नीच! मुझे नहीं चाहिए तेरा तीनों लोकों का सुख। तू शायद मेरे पति को जानता नहीं है। वे अपनी योग शक्ति से तुझे जलाकर राख कर देंगे।
हा...हा...हा...हा! सर्वभक्षी कुण्डोदर आग को भी खा जाता है। आग मुझे क्या जलायेगी?
वह साधारण आग नहीं होगी नीच! अणु-परमाणुओं के विस्फोटों से भी भयानक होगी वह आग।

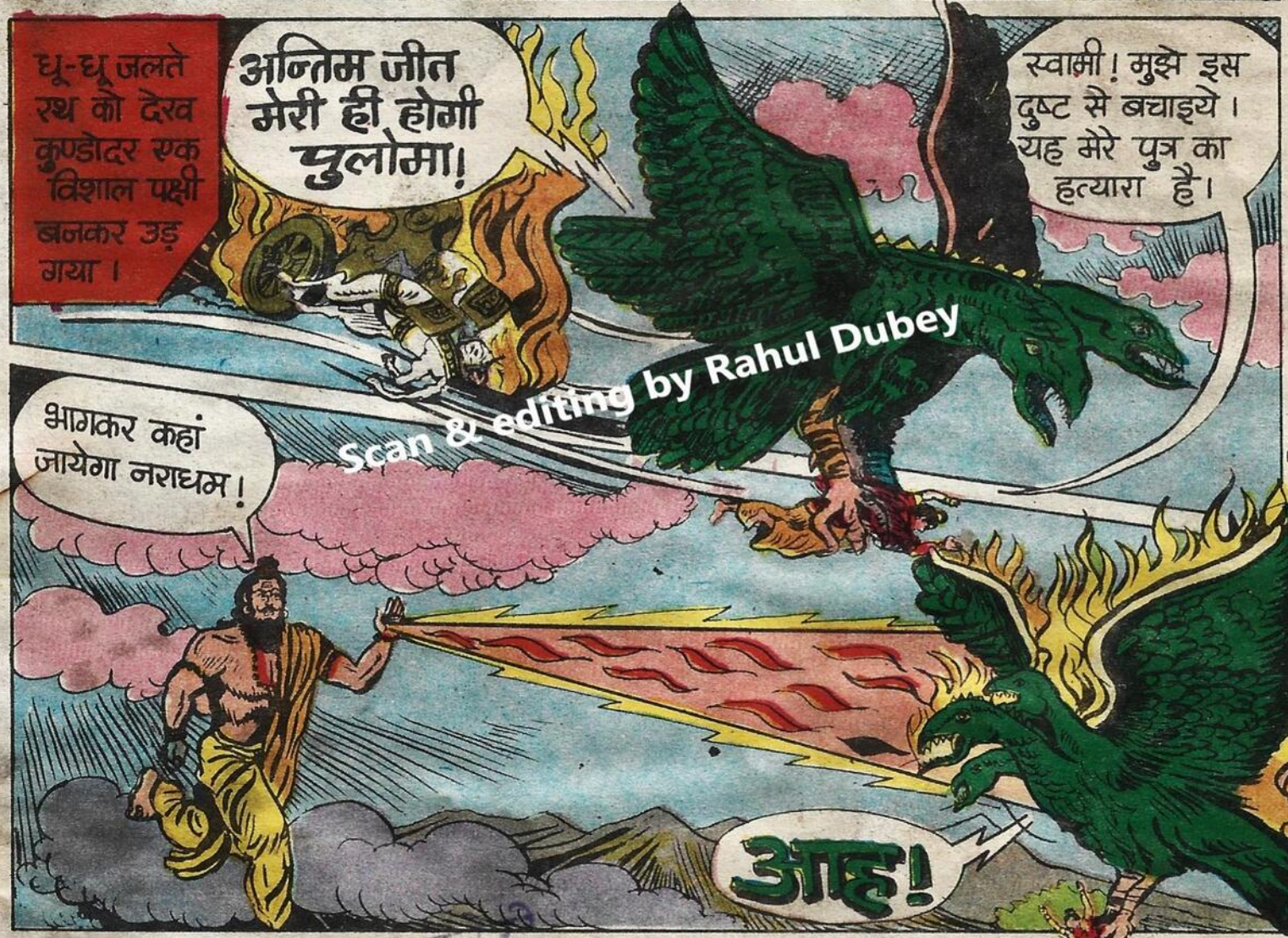

Scan & editing by Rahul Dubey

कुण्डोदर ने तत्काल उड़ने वाले नाग का रूप धारण किया —
हा...हा...हा...हा... कुण्डोदर अजर-अमर है।
आह! उफ!
लेकिन —
मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा कुन्डोदर!
उफ!
स्वामी!
घबराओ मत प्रिय!
उधर धरती पर गिरते ही —
हा...हा...हा...हा! कुण्डोदर को मारना इतना आसान नहीं है धूम्रदेव।

उसी समय पास ही—
कुण्डोदर!
तत्काल बालक ने अपना आकार फैलाया —
हा...हा... हा...हा! तू अभी तक जीवित है कीड़े ?
हां। और अब यही कीड़ा तेरे इस धुएँ जैसे जिस्म को छिन्न-भिन्न कर देगा।
फिर दोनों आपस में टकराये —
खड़ाक
तुझे दिखाता हूँ अपनी ताकत।
अबे, मर्द बनता है तो मायावी रूप छोड़कर टकरा।

ऐसा ही सही बच्चे ! ले संभाल मेरा वार ।
हा...हा...हा...हा ! यह वार तो चूक गया ।
अब मेरे वारों को संभाल ।
फर्रर्रर्र
आह !
यह ले ।
फर्रर्रर्र
आह !
यह ले !
फर्रर्रर्र
उफ !

Scan & editing by Rahul Dubey

कुछ देर बाद तीनों राजा पिडंरक के महल के आंगन में उतरे।
नीचे पहुंचने पर —
पिताजी!
सुखी रहो बेटी! तुम्हें फिर से सही सलामत पाकर मेरे मन को बड़ी शान्ति मिली है।
वाह! यह भी खूब रही। हमें तो कोई पूछ ही नहीं रहा।
लेकिन महाराज! आप फिर कभी किसी छोटे बालक को हंसी-खेल में भी किसी दुष्ट का नाम लेकर मत डराइयेगा।
सुनील बुक स्टाल
जैसा कि आपने मेरी मां को डराया था नाना जी। पर मैं इन बातों से डरने वाला कदापि नहीं हूं, क्योंकि मैं महर्षि धूम्रदेव का पुत्र हूं।
अरे!
मैंने तो तुझे देखा ही नहीं।
अपने नाना के चरण-स्पर्श करो बेटा।
आहा! मेरा नाती! जुग-जुग जिओ बेटा!
बिना बोले या बताये कौन जानेगा कि आप कौन हैं?
समाप्त

H. W. Parampara Series

बच्चों में सर्वाधिक लोकप्रिय पात्र

गोरिल्ला

(एक अद्भुत मानव जो दुश्मनों से टकराने के लिए बन जाता था—गोरिल्ला)

Scan & editing by Rahul Dubey

परम्परा कॉमिक्स में गोरिल्ला सीरीज का
एक और रोमांचक कॉमिक्स

बौनों का शिकार